# कुछ और गुलाब

## आशीर्वाद

श्री गंगाशरण सिंह

हिन्दी में गज़ल को उतारने की चुनौती स्वीकार तो बहुतों ने की परन्तु ग़ज़ल ने प्रायः उन्हें अस्वीकार ही किया है। पहली बार गुलाबजी ने हिन्दी को वे गज़लें प्रदान की हैं जो हिन्दी की अपनी हैं एवं उसकी अपनी भाव-भूमि पर खड़ी हैं। गीति-तत्त्व और रसान्विति के नए आयामों से मंडित कर, उन्होंने हिन्दी ग़ज़लों की कथन-भंगिमा और वाग्विदग्धता को एक नया अंदाज़ दे दिया है। उनमें साहित्य के व्यंजन के साथ संगीत का स्वर भी है।

ग़ज़ल मात्र एक छंद नहीं है, इसकी अपनी परम्परा और भंगिमा है। ग़ज़ल के पढ़ने के ढंग में और क़ता, रुबाई, मर्सिया आदि के पढ़ने के ढंग में बहुत अंतर होता है। गुलाबजी ने ग़ज़ल की समस्त विशेषताओं को समेटकर उसे हिन्दी में उतारा है।

गुलाबजी ने ग़ज़ल की आत्मा को पहचाना है और न केवल उर्दू ग़ज़लों का-सा सहज शब्द-विन्यास, बांकपन और तेवर उनकी ग़ज़लों में मिलता है बल्कि ग़ज़ल के अनुरूप वर्ण्य-विषय देने में तथा सम्प्रेषणीयता और भाव-प्रवाह उत्पन्न करने में भी वे खरे उतरे हैं। उन्होंने उर्दू ग़ज़लों के मोहक रूप को सांगोपांग हिन्दी में उतार कर हिन्दी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की है।

गुलाबजी के इस अभिनव प्रयोग को मैं अपना हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ। मुझे आशा है कि शीघ्र ही उनकी गज़लें अपनी सम्प्रेषणीयता तथा रसमयता के कारण सारे देश में फैल जाएँगी।

--- गंगाशरण सिंह
(पूर्व सांसद)